ایاتھا ۵ | ۱۱۱ سُوْرَةُ اللَّهَبِ مَكِّيَّةٌ ۶ | رکوعھا ۱

सूरए लहब मक्किय्या है, इस में पांच आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह्म वाला[1]

تَبَّتْ يَدَآ اَبِيْ لَهَبٍ وَّ تَبَّ ۞ ۱ مَاۤ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ ۞ ۲

तबाह हो जाएं अबू लहब के दोनों हाथ और वोह तबाह हो ही गया[2] उसे कुछ काम न आया उस का माल और न जो कमाया[3]

سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۞ ۳ وَّامْرَاَتُهٗ ؕ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۞ ۴ فِيْ

अब धंसता है लपट मारती आग में वोह और उस की जोरू[4] लकड़ियों का गठ्ठा सर पर उठाए उस

جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ۞ ۵

के गले में खजूर की छाल का रस्सा[5]

ع ۵۴ ۲۲

ایاتھا ۴ | ۱۱۲ سُوْرَةُ الْاِخْلَاصِ مَكِّيَّةٌ ۲۲ | رکوعھا ۱

सूरए इख़्लास मक्किय्या है, इस में चार आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह्म वाला[1]

चाहे दुन्या में रहे, चाहे उस की लिक़ा क़बूल फ़रमाए। उस बन्दे ने लिक़ाए इलाही इख़्तियार की। येह सुन कर ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : आप पर हमारी जानें, हमारे माल, हमारे आबा, हमारी औलादें सब क़ुरबान। **1 :** "सूरए अबी लहब" मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, पांच आयतें, बीस कलिमे, सतत्तर ह़र्फ़ हैं। **शाने नुज़ूल :** जब नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने कोहे सफ़ा पर अ़रब के लोगों को दा'वत दी हर त़रफ़ से लोग आए और हुज़ूर ने उन से अपने सिद्क़ो अमानत की शहादतें लेने के बा'द फ़रमाया : "اِنِّیْ لَکُمْ نَذِیْرٌم بَیْنَ یَدَیْ عَذَابٍ شَدِیْدٍ" इस पर अबू लहब ने हुज़ूर से कहा था कि तुम तबाह हो जाओ, क्या तुम ने हमें इस लिये जम्अ़ किया था। इस पर येह सूरत शरीफ़ नाज़िल हुई और **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीबे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की त़रफ़ से जवाब दिया : **2 :** अबू लहब का नाम अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा है। येह अ़ब्दुल मुत्त़लिब का बेटा और सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का चचा था, बहुत गोरा ख़ूब सूरत आदमी था, इसी लिये इस की कुन्यत अबू लहब है और इसी कुन्यत से वोह मश्हूर था। दोनों हाथों से मुराद इस की ज़ात है। **3 :** या'नी उस की औलाद। मरवी है कि अबू लहब ने जब पहली आयत सुनी तो कहने लगा कि जो कुछ मेरे भतीजे कहते हैं अगर सच है तो मैं अपनी जान के लिये अपने माल व औलाद को फ़िदया कर दूंगा, इस आयत में इस का रद फ़रमाया गया कि येह ख़याल ग़लत़ है, उस वक़्त कोई चीज़ काम आने वाली नहीं। **4 :** उम्मे जमील बिन्ते ह़र्ब बिन उमय्या अबू सुफ़्यान की बहन जो रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से निहायत इ़नाद व अ़दावत रखती थी और बा वुजूदे कि बहुत दौलत मन्द और बड़े घराने की थी लेकिन सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की अ़दावत में इन्तिहा को पहुंची थी कि ख़ुद अपने सर पर कांटों का गठ्ठा ला कर रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के रास्ते में डालती ताकि हुज़ूर को और हुज़ूर के अस्ह़ाब को ईज़ा व तक्लीफ़ हो और हुज़ूर की ईज़ा रसानी उस को इतनी प्यारी थी कि वोह इस काम में किसी दूसरे से मदद लेना भी गवारा न करती थी। **5 :** जिस से कांटों का गठ्ठा बांधती थी, एक रोज़ येह बोझ उठा कर ला रही थी कि थक कर आराम लेने के लिये एक पथ्थर पर बैठ गई, एक फ़िरिश्ते ने ब हुक्मे इलाही उस के पीछे से उस के गठ्ठे को खींचा वोह गिरा और रस्सी से गले में फांसी लग गई और वोह मर गई। **1 :** "सूरए इख़्लास" मक्किय्या व बक़ौले मदनिय्या है, इस में एक रुकूअ़, चार या पांच आयतें, पन्दरह कलिमे, सेंतालीस ह़र्फ़ हैं। अह़ादीस

www.dawateislami.net

ع

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝١ۚ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝٢ۚ لَمْ یَلِدْ ۙ۬ وَ لَمْ یُوْلَدْ ۝٣ۙ وَ لَمْ

तुम फ़रमाओ वोह **अल्लाह** है वोह एक है[2] **अल्लाह** बे नियाज़ है[3] न उस की कोई औलाद[4] और न वोह किसी से पैदा हुवा[5] और न

یَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝٤ۧ

उस के जोड़ का कोई[6]

اٰیاتها ٥ | ١١٣ سُوْرَةُ الْفَلَقِ مَكِّيَّةٌ ٢٠ | رکوعها ١

सूरए फ़लक़ मक्किय्या है, इस में पांच आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝١ۙ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝٢ۙ وَ مِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا

तुम फ़रमाओ मैं उस की पनाह लेता हूं जो सुब्ह़ का पैदा करने वाला है[2] उस की सब मख़्लूक़ के शर से[3] और अंधेरी डालने वाले के शर से जब

में इस सूरत की बहुत फ़ज़ीलतें वारिद हुई हैं, इस को तिहाई क़ुरआन के बराबर फ़रमाया गया या'नी तीन मरतबा इस को पढ़ा जाए तो पूरे क़ुरआन की तिलावत का सवाब मिले, एक शख़्स ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि मुझे इस सूरत से बहुत मह़ब्बत है फ़रमाया इस की मह़ब्बत तुझे जन्नत में दाख़िल करेगी। (ترمذی) **शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ारे अ़रब ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ तबारक व तआ़ला के मुतअ़ल्लिक़ त़रह़ त़रह़ के सुवाल किये, कोई कहता था कि **अल्लाह** का नसब क्या है ? कोई कहता था कि वोह सोने का है या चांदी का है ? या लोहे का है या लकड़ी का है ? किस चीज़ का है ? किसी ने कहा वोह क्या खाता है, क्या पीता है ? रबूबिय्यत उस ने किस से विरसे में पाई ? और उस का कौन वारिस होगा ? उन के जवाब में **अल्लाह** तआ़ला ने येह सूरत नाज़िल फ़रमाई और अपने ज़ातो सिफ़ात का बयान फ़रमा कर मा'रिफ़त की राह वाज़ेह़ की और जाहिलाना ख़यालात व अवहाम की तारीकियों को जिन में वोह लोग गिरिफ़्तार थे अपनी ज़ातो सिफ़ात के अन्वार के बयान से मुज़्मह़िल कर दिया। **2 :** रबूबिय्यत व उलूहिय्यत में सिफ़ाते अ़ज़्मतो कमाल के साथ मौसूफ़ है, मिस्ल व नज़ीर व शबीह से पाक है, उस का कोई शरीक नहीं। **3 :** हर चीज़ से। न खाए न पिये, हमेशा से है हमेशा रहे। **4 :** क्यूं कि कोई उस का मुजानिस नहीं। **5 :** क्यूं कि वोह क़दीम है और पैदा होना ह़ादिस की शान है। **6 :** या'नी कोई उस का हम्ता व अ़दील नहीं। इस सूरत की चन्द आयतों में इ़ल्मे इलाहिय्यात के नफ़ीस व आ'ला मत़ालिब बयान फ़रमा दिये गए जिन की तफ़्सीलात से कुतुब ख़ाने के कुतुब ख़ाने लबरेज़ हो जाएं। **1 :** "सूरए फ़लक़" मदनिय्या है और एक क़ौल येह है कि मक्किय्या है। "وَالْاَوَّلُ اَصَحُّ" (या'नी मदनिय्या वाला क़ौल ज़ियादा सह़ीह़ है) इस सूरत में एक रुकूअ़, पांच आयतें, तेईस कलिमे, चोहत्तर ह़र्फ़ हैं। **शाने नुज़ूल :** येह सूरत और सूरतुन्नास जो इस के बा'द है येह उस वक़्त नाज़िल हुईं जब कि लबीद बिन आ'सम यहूदी और उस की बेटियों ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर जादू किया और हुज़ूर के जिस्मे मुबारक और आ'ज़ाए ज़ाहिरा पर इस का असर हुवा, क़ल्ब व अ़क़्ल व ए'तिक़ाद पर कुछ असर न हुवा। चन्द रोज़ के बा'द जिब्रील (عَلَیْہِ السَّلَام) आए और उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि एक यहूदी ने आप पर जादू किया है और जादू का जो कुछ सामान है वोह फुलां कूंएं में एक पथ्थर के नीचे दाब दिया है। हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भेजा, उन्हों ने कूंएं का पानी निकालने के बा'द पथ्थर उठाया, उस के नीचे से खजूर के गाभे की थैली बरआमद हुई, उस में हुज़ूर के मूए शरीफ़ जो कंघी से बरआमद हुए थे और हुज़ूर की कंघी के चन्द दन्दाने और एक डोरा या कमान का चिल्ला जिस में ग्यारह गिरहें थीं और एक मोम का पुतला जिस में ग्यारह सूइयां चुभी थीं, येह सब सामान पथ्थर के नीचे से निकला और हुज़ूर की ख़िदमत में ह़ाज़िर किया गया। **अल्लाह** तआ़ला ने येह दोनों सूरतें नाज़िल फ़रमाईं, इन दोनों सूरतों में ग्यारह आयतें हैं पांच सूरए फ़लक़ में, हर एक आयत के पढ़ने के साथ ही एक गिरह खुलती जाती थी यहां तक कि सब गिरहें खुल गईं और हुज़ूर बिल्कुल तन्दुरुस्त हो गए। **मस्अला :** ता'वीज़ और अ़मल जिस में कोई कलिमा कुफ़्र या शिर्क का न हो जाइज़ है, ख़ास कर वोह अ़मल जो आयाते क़ुरआनिय्या से किये जाएं या अह़ादीस में वारिद हुए हों, ह़दीस शरीफ़ में है कि अस्मा बिन्ते उ़मैस ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم जा'फ़र के बच्चों को जल्द जल्द नज़र होती है क्या मुझे इजाज़त है कि उन के लिये अ़मल करूं ? हुज़ूर ने इजाज़त दी। (ترمذی) **2 :** तअ़व्वुज़ में **अल्लाह** तआ़ला का इस वस्फ़

www.dawateislami.net